

बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं : कुदरती जादू या लंबा, लंबा सफर?

जीन ऐचिसन

यह व्याख्यान भाषा के ज्ञान के निर्माण के बारे में है, और इस बारे में है कि क्या भाषा सीखना एक कुदरती जादू है या एक लंबा परिश्रम? खैर, यह थोड़ा-थोड़ा दोनों है। ज़ाहिर है कि कुछ तो कुदरती यानी जन्मजात है अन्यथा गोल्डफिश भी बोलना सीख जाती। मगर सीखने की भी भूमिका है; बरसों बाद ही बच्चे दक्ष हो पाते हैं। मैं मुख्य रूप से प्रथम भाषा सीखने के बारे में बात कर रही हूँ मगर थोड़ी बात दूसरी भाषा सीखने के बारे में भी।

सबसे पहले, यह सीखने की मंजिले वितरित पर्चे के पहले खण्ड में कहा गया है कि भाषा में कुदरती रूप से निर्देशित सीखना शामिल होता है। इस तरह के सीखने में जंतु सहजवृत्ति से जानता है कि उसे किस बात पर ध्यान देना है, मगर बारीकियाँ सीखने में समय लगाना होता है। पक्षी और मधुमक्खियाँ और फूल इसके उम्दा उदाहरण हैं।

फूल एक-दूसरे से काफी अलग होते हैं और मधुमक्खियाँ फूलों के बारे में जानते हुए पैदा नहीं होती, उन्हें सीखना होता है। उन्हें सहजवृत्ति से पता होता है कि उन्हें गंध, रंग और आकृति पर इसी क्रम में ध्यान देना है। इसलिए वे किसी बस स्टॉप या पोस्ट बॉक्स की ओर उड़ना सीखने की बजाय गुलाब तक उड़ना सीखती हैं जबकि कभी-कभी बस स्टॉप और पोस्ट बॉक्स भी चटख रंगों के होते हैं। इसी प्रकार से मानव शिशु भी कुदरती तौर पर लोगों के मुँह से निकलती ध्वनियों पर ध्यान देते हैं और उन्हें सहजवृत्ति से इनका अर्थ निकालना आता है। मगर इसमें लंबा समय लगता है।

हम रोने के साथ शुरू करते हैं। शुरू में बच्चे सिर्फ रोते हैं। ऐसा कहते हैं कि बेंजामिन फ्रेकलिन ने (बच्चों के बारे में) कहा था, "एक सिरे पर ज़ोरदार आवाज़ और दूसरे पर जिम्मेदारी का कोई एहसास नहीं"। सारी भाषाओं में एक ही तरह का रोना देखा जा सकता है। कोई भारतीय माँ और कोई अंग्रेजी माँ खुद अपने और एक-दूसरे के बच्चे का रोना पहचान जाएँगी। इसके बाद बच्चे गूँ-गूँ करते हैं, यह करीब 6 सप्ताह में आता है। और इसके बाद करीब छः माह पर वे ऊल जलूल आवाज़ें निकालते हैं, या जैसी आवाज़ें दोहराते रहते हैं। माता-पिता कई बार मान लेते हैं कि उनके बच्चे उन्हें पुकार रहे हैं, हालाँकि अपने होंठों के साथ प्रयोग करते हुए यही आवाज़ें निकालना उनके लिए सबसे आसान होता है। अब हम उतार-चढ़ाव पर आते हैं, जो करीब 8 माह में आता है। बच्चों की आवाज़ ऐसी लगती है जैसे वे बातें कर रहे हैं, मगर वे तो सिर्फ सुनी हुई भाषा की लय की नकल कर रहे हैं।

फिर हमें दो शुरूआती भाषाएँ मिलती हैं। एकल-शब्द-उद्गार करीब 12 माह में आता है। जैसे अंग्रेजी में बच्चे अक्सर 'du' कहते हैं जिसका मतलब होता है juice। दो शब्दों के उद्गार करीब 18 माह में आते हैं— जैसे more do मतलब more juice। where daddy जैसे सवाल, और no bed जैसे नकारात्मक वाक्य करीब दो वर्ष में आते हैं।

अब हम आगे के मुकाम पर पहुँचते हैं। हम देखते हैं कि लंबे वाक्य करीब 3 वर्ष की उम्र में आते हैं मगर थोड़ा सावधानी से छानबीन करने पर पता चलता है कि इस समय तक बच्चे कहीं अधिक जानते हैं। 10 वर्ष की उम्र तक सारी प्रमुख संरचनाएँ तैयार हो जाती हैं, काफी जटिल संरचनाएँ भी। मगर सीखने का एक पक्ष आजीवन जारी रहता है— शब्द सीखना, शब्द भंडार का अर्जन।

अब हम अगले पड़ाव पर पहुँचते हैं: शब्द सामर्थ्य। बच्चे बहुत छोटे उम्र से ही कई शब्द समझते हैं; मेरा भतीजा, जब उसके माता-पिता कहते कि 'मुझे बाघ दिखाओ' तो वह अपने पालने के ऊपर लगे चित्र में काफी विश्वसनीय ढंग से बाघ की ओर इशारा कर सकता था मगर उसके लिए यह एक खेल भर था। जब उसके माता-पिता बाघ शब्द बोलते तो उसे पता था कि पट्टे वाले जानवर की ओर इशारा करना है। उसे शायद यह पता नहीं था कि यह उस जानवर का नाम है जिसकी ओर वह

इशारा कर रहा है। किसी अवस्था में बच्चे नामों की ताकत समझ जाते हैं, वे 'नामकरण समझ' नामक कोई चीज़ हासिल कर लेते हैं यानी यह समझ कि चीज़ों के नाम होते हैं। वे इस मुकाम पर दूसरे साल में, आम तौर पर 15 से 18 माह की उम्र में पहुँचते हैं। इसके बाद वे हर चीज़ को नाम देते हैं। अब जाहिर है हम घुटने चलते बच्चों से इसकी बात नहीं कर सकते, मगर बहरे बच्चों के अनुभव से इस मुकाम के बारे में काफी कुछ जानते हैं जो नामकरण समझ के पड़ाव पर देर से पहुँचते हैं।

हाल का एक मामला एक बहरे मेक्सिकन अल डेफांसो का है, जिसने नामकरण की समझ खोज ली थी जबकि उसे बताया नहीं गया था। उसने इसकी खोज चरणों में की थी। सबसे पहले संख्याएँ, फिर संज्ञाएँ और फिर क्रियाएँ। अब सब लोग सहमत है कि करीब 18 माह की उम्र में शब्द उफान आता है, जब लगता है कि बच्चे शब्द सीखते जाते हैं। दो वर्ष की उम्र तक आम तौर पर बच्चे कई सैकड़ा शब्द जानते हैं, और बड़े लोगों के समान बोलते हैं जबकि वे अभी बड़े नहीं हुए हैं, और तीन वर्ष की उम्र तक हजार से ज्यादा शब्द जानते हैं। बच्चों के पास सक्रिय शब्द भंडार करीब 3000 शब्दों का होता है, अक्रिय शब्द भंडार (जिन्हें वे समझते हैं) संभवतः इससे काफी ज्यादा, अनुमानित 10000 शब्दों का, हो सकता है। शब्द खोज करीब 13 वर्ष की उम्र में होती है। मैंने एक शोधकर्ता एन कोपेल के साथ 11-14 वर्ष के ब्रिटिश बच्चों के शब्द भंडार का एक सर्वेक्षण किया था। हमने 400 बच्चों की जाँच की थी, दो स्कूलों के 200-200 बच्चे थे और हमने देखा कि 11 और 12 वर्षीय बच्चे एक समूह में रहे और 13-14 वर्षीय बच्चे दूसरे समूह में। अधिकांश ब्रिटिश बच्चों ने 13 वर्ष की उम्र तक 20,000 शब्द हासिल कर लिए थे। यह संख्या याद रखें 20,000। 20,000 शब्द वह सरहदी मात्रा है जो धाराप्रवाह अंग्रेज़ी बोलने के लिए चाहिए। मैंने पाया कि विदेशी छात्र, जिनमें से कुछ का परीक्षण मैंने किया था (कुछ भारतीय भी थे), जो इस मात्रा तक पहुँच गए थे किसी भी विषय के बारे में दक्षता पूर्वक बात कर सकते थे। और 20,000 से कम शब्दों वालों को जूझना पड़ता था। औसत ब्रिटिश भाषी वयस्क 50,000 शब्द जानता है। तुलना के लिए देखें कि कॉन्साइस ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी का दावा है कि उसमें 75,000 शब्द हैं। तो एक औसत ब्रिटिश वयस्क दो-तिहाई कॉन्साइस ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी जानता है। मगर कोई इससे पीछे भी है तो चिंता नहीं क्योंकि शब्द सीखना आजीवन चलता है।

अब मैं अगले खण्ड पर जा रही हूँ— भाषा और बुद्धिमत्ता का पृथक्करण। भाषा, यानी बोलने की क्षमता, (आश्चर्यजनक रूप से) आम बुद्धिमत्ता से अलग है। आम तौर पर भाषा और बुद्धि साथ-साथ आगे बढ़ते हैं, मगर ऐसे कई विचित्र मगर मेधावी इन्सान हैं जिनमें भाषा और बुद्धि अलग-अलग होते हैं। पहली है एक महिला लौरा, कभी-कभी मार्था। लौरा व्याकरण की दृष्टि से नफीस वाक्यों का उपयोग करती थी मगर अक्सर इनका कुछ मतलब नहीं होता था, जैसे— "पिछले वर्ष मैं 16 वर्ष की थी और अब मैं इस साल 19 वर्ष की हूँ"; और यह मेरा प्रिय वाक्य है— "वह सोच रही थी कि यह कोई आम स्कूल नहीं है, यह तो बस अच्छा सा पुराने किस्म का था, कोई बस नहीं और मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता कि वह मेरे मुँह में पेपर ऑवेल डाले।" लौरा सीखे हुए वाक्यों के टुकड़े नहीं दोहरा रही थी, क्योंकि वह व्याकरण की गलतियाँ भी करती थी। जैसे, "These are two glasses I have taken, it was given by a friend, I don't know how I caught it." एक और उदाहरण क्रिस्टोफर का है जिसकी भाषा व बुद्धि अलग-अलग हो गए थे। वह गंभीर मानसिक अपंगता से पीड़ित है। वह अपनी देखभाल नहीं कर पाता, मगर भाषा सीखने में खासा हुनर रखता है। जब वह 29 वर्ष का था, उसने स्वीडिश से यह तर्जुमा किया था— "Mia is sitting crouched in the kitchen sofa, with her knees bent and her feet tied up in lovely night shirt, the cat spins in her knee." यह एकदम सही अनुवाद था। "Mia is crouched up on the kitchen sofa, with her knees drawn out and her feet tucked into her stripy nightie, the cat is purring into her knee." भी वही अनुवाद है जो क्रिस्टोफर का था मगर क्रिस्टोफर ने purr शब्द को स्वीडिश के शब्द spin शब्द से भ्रमित कर दिया था जो purr जैसा ही लगता है। और एक किस्म का बच्चा है, जो बच्चे विलियम सिंड्रोम से पीड़ित हैं। वे विशेष कार्यों से नहीं निपट पाते, जैसे, वे एक सायकल से पुर्जों को जोड़कर पूरी सायकल नहीं बना पाते।

मगर उनकी भाषा काफी नफीस और विस्तृत होती है। उदाहरण के लिए 17 वर्ष के एक बच्चे द्वारा दिया गया ब्रेन स्कैन का विवरण देखिए— “एक बड़ी चुंबकीय मशीन होती है, उसने भेजे के अंदर का चित्र खींचा। आप बात कर सकते हैं मगर अपना सिर नहीं घुमा सकते क्योंकि उससे पूरी चीज़ बरबाद हो जाएगी और उन्हें फिर से शुरू करना पड़ेगा। यह सब होने के बाद, वे आपको एक कंप्यूटर पर आपका भेजा दिखाते हैं और वे देखते हैं कि वह कितना बड़ा है।”

अब मैं उन तथ्यों का वर्णन करना या चर्चा करना चाहती हूँ कि इन्सान जैविक रूप से, शारीरिक व मानसिक दोनों तरह से, भाषा के लिए ढले हैं। शारीरिक स्तर पर जीभ मांसल और गतिशील है। वह कुत्ते जैसे अन्य जानवरों की तरह सुस्त नहीं है। इन्सान की जीभ उपयोगी है; यह न सिर्फ़ मुँह के हर हिस्से से भोजन को बटोर सकती है, बल्कि विभिन्न किस्म की आवाज़ें निकाल सकती है। इन्सान के दाँत एक बराबर होते हैं, और हालाँकि शायद यह भोजन खाने के लिहाज़ से बहुत बढ़िया न हो, मगर इसकी बदौलत मुँह में एक उपयोगी पर्दा बनाने में मदद मिलती है जिसके द्वारा [t, s, z, l] जैसी आवाज़ें उच्चारित की जा सकती हैं। बोलते समय फेफड़े साँस को जल्दी-जल्दी खींचने और धीरे-धीरे छोड़ने में मददगार होते हैं।

यह अनुकूलन असाधारण है क्योंकि अधिकांश मामलों में श्वसन को नियंत्रित नहीं किया जा सकता। मगर इन्सान बगैर परेशानी घण्टों बोल सकते हैं; उन्हें साँस लेने में दिक्कत की नहीं, गला दुखने की संभावना ज़्यादा है। हमारे स्वर रज्जु गले में झिल्लियों की पतली-पतली पट्टियाँ हैं, जो मूलतः (और आज भी) फेफड़ों को बंद करके पसलियों के पिंजर को सख्त बनाने में उपयोगी हैं जो भारी बोझ उठाने या पेड़ों पर झूलने जैसे मेहनत के काम में ज़रूरी होता है।

किसी चिंपेंज़ी के सिर और भाषा और शरीर इन्सान के सिर में अंतर पर गौर कीजिए। इन्सान नाक की गुहा को बंद कर सकते हैं और पहचानने योग्य आवाज़ें पैदा कर सकते हैं, खासतौर से तीन एंकर स्वर [i, u, a]। और जब एक बार हम ये तीन स्वर बोल पाएँ, तो यह भाषा की हमारी उड़ान की कुंजियों में से एक थी। अब मैं 50-75 हजार साल पहले की बात कर रही हूँ। अब, हमारे मानव मस्तिष्क भाषा के लिए विशेषीकृत हो गए हैं। हमारे दिमाग चिम्पेंज़ी से बड़े हैं, खास तौर से अगला हिस्सा, मगर वास्तव में साइज़ की बजाय गुणवत्ता का ज़्यादा महत्त्व है। अधिकांश इन्सानों में बाएँ गोलार्ध का उपयोग भाषा के लिए होता है। अधिकांश इन्सान दाएँ हाथ से काम करने में दक्ष होते हैं और इनमें से 90 प्रतिशत में भाषा बाएँ गोलार्ध या भेजे के बाएँ हिस्से में होती है। वामहस्त लोग, जो अपेक्षाकृत बिरले होते हैं, मैं से भी अधिकांश में भाषा मुख्यतः बाएँ गोलार्ध में होती है। ये आँकड़े तंत्रिका विज्ञान की एक किताब से हैं जो बताते हैं कि 90 प्रतिशत दक्षिणहस्त लोगों में और अधिकांश वामहस्त लोगों में भी भाषा बाएँ गोलार्ध में होती है। एक जीव वैज्ञानिक एरिक लेनबर्ग ने 1967 में एक महत्त्वपूर्ण किताब लिखी थी जिसका नाम था ‘*दी बायोलॉजिकल बेसिस ऑफ़ लैंग्वेज*’ उन्होंने बताया था कि भाषा एक परिपक्वता नियंत्रित व्यवहार है, यानी चलना सीखने या यौन व्यवहार के समान एक व्यवहार जिसमें व्यवहार के विभिन्न पहलू व्यक्ति के जीवन के अलग-अलग मुकामों पर कुदरती रूप से विकसित होते हैं, बशर्ते कि आसपास के परिवेश में पर्याप्त उद्दीपन मौजूद हो। उन्होंने इस तरह के व्यवहार को पहचानने के लिए कुछ प्रमुख बिंदु बताए थे:

1. परिपक्वता नियंत्रित व्यवहार उसकी ज़रूरत होने से पहले उभरता है।
2. यह किसी बाह्य घटना से प्रेरित होकर शुरू नहीं होता। जब बच्चों को बोलना होता है तब माता-पिता उन्हें अचानक सिर के बल नहीं पटकते।
3. यह किसी सचेत निर्णय का परिणाम नहीं होता।
4. प्रत्यक्ष शिक्षण का असर अपेक्षाकृत कम होता है। और
5. पड़ावों का एक नियमित क्रम होता है।

1967 की अपनी किताब में लेनेबर्ग ने दलील दी थी कि एक तयशुदा निर्णायक अवधि होती है जिसके दौरान भाषा अर्जन संभव है। उन्होंने दावा किया था कि यह (अवधि) करीब दो वर्ष की उम्र में शुरू होती है और किशोरावस्था में समाप्त हो जाती है। इसके बाद, उनके मुताबित, “भाषा अर्जन नामुमकिन है”। मगर इस कठोर निर्णायक अवधि के बारे में वे गलत थे। वे दो लिहाज़ से गलत थे। पहला कि बच्चे दो वर्ष की उम्र से पहले बड़ी मात्रा में भाषा अर्जित करते हैं। दो वर्ष से कम उम्र में बाएँ गोलार्ध में गंभीर क्षति होने पर भाषा संबंधी स्थायी क्षति हो सकती है। दूसरा, पार्श्वीकरण (यानी भाषा का विशेषीकरण बाएँ गोलार्ध में होना) बहुत कम उम्र के शिशुओं में देखा गया है। अर्थात् यदि उनके सामने भाषा की ध्वनियाँ बजाई जाएँ, तो वे बाएँ गोलार्ध से ध्यान देती हैं। यह बात काफी विस्तृत प्रयोगों से पता चली है। और यह भी काफी महत्वपूर्ण है कि नवजात शिशु भी खुद अपनी भाषा पर ज़्यादा ध्यान देते हैं, जिससे पता चलता है कि वे कोख में ही इसकी लय के प्रति अनुकूलित खो चुके होते हैं। और लेनेबर्ग की सोच के विपरीत, किशोरावस्था किसी बिन्दु पर यकायक शुरू नहीं होती। भाषा अर्जन 13 वर्ष की उम्र के बाद भी चलता रह सकता है। अधिक उम्र के कुछ लोग भी भाषा सीखने में बढ़िया होते हैं। एक और महत्वपूर्ण बात है कि शब्द भंडार का निर्माण तो ताज़िन्दगी चलता रहता है। लोग अपना शब्द भंडार (यदि संभव हुआ हो तो) 100 वर्ष की उम्र तक बढ़ाते रह सकते हैं और यह भी काफी महत्वपूर्ण है कि शब्द भंडार का निर्माण करीब 13 वर्ष की उम्र में शिखर पर होता है। तो शोधकर्ता आजकल सरहदी अवधि की बजाय संवेदी अवधि की बात करते हैं, वह समय जिसमें बच्चों का संपर्क भाषा से कराया जाना चाहिए, मगर यह अवधि लेनेबर्ग ने जो सोचा था उससे काफी पहले शुरू हो जाती है और देर तक जारी रहती है। तो मूलतः लोग मानते हैं कि अवसरों की खिड़की ज़्यादा लंबे समय तक खुली रहती है और अपेक्षाकृत धीरे-धीरे बंद होती है। और, उदाहरण के लिए जो परिवार कनाडा प्रवास कर गए हैं, उन्होंने देखा है कि उनके बच्चे वो फ्रांसिसी सीख लेते हैं जो फ्रांसिसी कनाडावासी बोलते हैं। प्रवास के समय बच्चे जितने छोटे होते हैं, उतनी ही आसानी से वे फ्रांसिसी सीखते हैं। जैसा कि हम आज जानते हैं, यह संवेदी अवधि बदलती संवेदनाओं का दौर होता है। बहुत छोटे बच्चे अपनी भाषा की ध्वनि संरचना सीखने में बहुत तेज़ होते हैं। बड़े बच्चे व्याकरण की संरचना पर ध्यान देते हैं। किशोर बच्चे शब्द भंडार पर ध्यान देते हैं। बड़े बच्चे वास्तव में भाषा अर्जित करने के लिए तैयार नहीं होते।

भाषा और माहौल

इसमें कोई संदेह नहीं कि जो लोग बच्चों की देखभाल करते हैं वे इसमें सहायक या बाधक हो सकते हैं। एक समय था जब बच्चों से बोलने की बोली के लिए मदरीज़ यानि माँ की बोली शब्द का प्रयोग होता था। मगर अब हम इस शब्द का उपयोग ज़्यादा नहीं करते क्योंकि सिर्फ माँ ही बच्चों की देखभाल नहीं करती। पिता, रिश्तेदार और दोस्त भी करते हैं। तो आजकल प्रचलित शब्द देखभालकर्ता है, यानी जो भी देखभाल करे। और हम देखभालकर्ताओं और बाल-संबोधित बोली (child directed speech - CDS) की बात करते हैं। अब यह पता चला है कि लोग जो बातें प्रथम भाषा के देखभालकर्ताओं और सीडीएस के बारे में कहते हैं वे काफी हद तक द्वितीय भाषा सीखनेवालों पर भी लागू होती हैं।

अब, सबसे पहले तो सीधे बच्चे से बात करना आवश्यक है। इसमें यह मतलब नहीं है कि बच्चे को टीवी के सामने पटक दें और उम्मीद करें वह अंग्रेज़ी सीख जाएगा, वह नहीं सीखेगा। विन्सेन्ट नाम के बच्चे का एक बहुत दिलचस्प मामला हुआ था, जिसके माता पिता बधिर थे। वे चाहते थे कि विन्सेन्ट न सिर्फ उनकी भाषा— संकेत भाषा — सीखे बल्कि अंग्रेज़ी भी सीखे। तो वे उसे टीवी के सामने बैठा दिया करते थे, मगर विन्सेन्ट ने कुछ अंग्रेज़ी नहीं सीखी। तो, कुल मिलाकर, जी हाँ, आपको बच्चे से बातचीत करनी चाहिए, मगर सही ढंग से। सबसे पहले तो बच्चों (या किसी भी सीखने वाले) को आलोचना की शैली में, खुले आम या दबे-छुपे, टोकना नहीं चाहिए। अर्थात् आप यह कभी न कहें, “नहीं, यह गलत है।” इस ढंग का भूल सुधार बच्चे को अवरुद्ध कर सकता है, खास तौर से यदि

देखभालकर्ता आलोचना का स्वर अख्तियार कर ले। वास्तव में जितना कहा जाता है, बच्चे उससे अधिक देखते हैं। और वे यह समझ जाते हैं कि उनका तिरस्कार किया जा रहा है। यह बात द्वितीय भाषा सीख रहे बड़े बच्चों के लिए भी सही है। तो भूल सुधार, खास तौर से यदि आलोचना की शैली में किया जाए, तो बाधक बन सकता है। फिर बच्चे अक्सर इस बात पर ध्यान नहीं देते कि किस चीज़ को सुधारा जा रहा है। वे तो बस इतना जानते हैं कि उन्हें कोई पसंद नहीं करता या कोई उनकी तारीफ नहीं करता और हो सकता है कि वे इसे देखे नहीं या इसकी परवाह न करें। इसके अलावा, माता-पिता जिन चीज़ों में सुधार करते हैं उसमें एकरूपता नहीं रहती। और अक्सर वे भाषा की गलतियों की बजाय तथ्य को सुधारने की कोशिश करते हैं।

जैसे जब बच्चे ने कहा कि "teddy sock on" (जब टेडी ने जुराबें पहनी हुई थी) तो हो सकता है कि उसके पालक कहें "Good! That's right. Teddy's got a sock on"। मगर यदि बच्चे ने व्याकरण के लिहाज़ से सही कहा कि "Teddy's got his sock on" जबकि टेडी ने जुराबें नहीं पहनी हुई हैं, तब शायद पालक कहेंगे "No, you are wrong. Teddy is not wearing a sock"। संक्षेप में, जैसा कि रॉजर ब्राउन ने कभी कहा था, "यदि भूल सुधार उसी ढंग से काम करता हो जैसा पालक सोचते हैं, तो उम्मीद की जानी चाहिए कि बच्चे सत्य को व्याकरण-विरुद्ध बोलते बड़े होंगे।"

दरअसल, मामला उल्टा लगता है। अब कई लोगों ने हाल में भूल सुधार पर अनुसंधान किया है और दर्शाया है कि यह कभी-कभी कारगर होता है, बशर्ते कि बच्चा उस समय भाषा के उस पहलू पर काम कर रहा हो और यदि यह दोस्ताना अंदाज़ में किया जाए। किसी भी समय बच्चे भाषा के किसी पहलू पर चुनिंदा ढंग से ध्यान देते हैं और यही बात द्वितीय भाषा सीखने वालों पर भी लागू होती है। जैसे एलेक्स के उदाहरण को देखिए:

किसी समय एलेक्स भूतकाल के प्रति खास तौर से सजग था। उसने कहा, "The crocodile bitted the giraffe's feet"। पिता ने कहा, "He bit his feet" और एलेक्स ने कहा, "Yes, and he bite me too" इससे पता चलता है कि बच्चे ने भूत काल पर ध्यान दिया था। मगर हम इतना जानते हैं कि पालकों और शिक्षकों को चाहिए कि वे सीखनेवाले के लिए संशोधन हेतु एक बढ़िया आधार मुहैया करवाएँ। उन्हें चाहिए कि वे धीमे, सुस्पष्ट, उतार-चढ़ाव को बढ़ा-चढ़ाकर, छोटे-छोटे, सुगठित कथन दें। इसमें दोहराव होना चाहिए मगर यह सीधी पुनरावृत्ति न हो और इसमें व्याकरण की विविधता होनी चाहिए। जैसे आप बच्चे को कह सकते हैं, "It's breakfast time. Shall we make some toast? You must be hungry. What do you want to drink? Some orange?" **वैसे भी मात्र बोलना महत्त्वपूर्ण नहीं है, बच्चों या सीखनेवालों को यह महसूस भी होना चाहिए कि वे एक वयस्क के साथ एक संयुक्त उद्यम में शामिल हैं।**

उदाहरण के लिए, "Shall we go and feed the rabbits now? The rabbits must be getting hungry. They want their dinner, shall we give them some cabbage leaves? They like cabbage leaves, don't they?"

द्वितीय भाषा सीख रहे बड़े बच्चों के साथ संयुक्त उद्यम मुश्किल जरूर है मगर नामुमकिन नहीं है। यह मुमकिन है, बशर्ते कि आप उन्हें कुछ करने को दें, जैसे, इंग्लैण्ड या अमेरिका का नक्शा बनाकर उसमें लंदन या न्यूयॉर्क दर्शाने या भारत में दिल्ली और मुंबई को सही जगह पर रखने को कहें। भारतीय बच्चों द्वारा अंग्रेज़ी सीखने के बारे में प्रभु की एक महत्त्वपूर्ण किताब है, और रमाकांत अग्निहोत्री ने भी काफी महत्त्वपूर्ण काम किया है।

भाषा सीखने का सिलसिला

बच्चे कंप्यूटर से भी शुरुआत कर सकते हैं, अंततः उन्हें जिन प्रोग्राम्स से काम करना है उनकी बनिस्बत सरल प्रोग्राम्स से शुरू कर सकते हैं। इंग्लैण्ड में जब हम कंप्यूटर चालू करते हैं तो बूटिंग अप

कहते हैं। अमरीकी लोग बूटस्ट्रैपिंग की बात करते हैं। तो बच्चे में बूटस्ट्रैपिंग कैसे काम करेगा? शुरु में बच्चा एक सरल परिकल्पना बनाएगा, कि हर वाक्य डैडी, मम्मी, डैडी गो जैसे शब्दों से शुरु होता है। फिर उसके बाद कार या कप या गर्ल जैसा कोई शब्द आएगा, जैसे डैडी कार, मम्मी कप, डैडी गो। फिर वह शायद यह समझ पाए कि इन उद्गारों में अंतर थे और सोचने लगे कि ऐसा क्यों है और इससे उसकी कही बात पर क्या असर पड़ा। और अंत में वे समझ पाएँगे कि वाक्य अलग-अलग तरह के वैयाकरणिक संबंध व्यक्त करते हैं। आम तौर पर हम जानते हैं कि जब बच्चे भाषा के किसी पहलू पर लगे होते हैं, तो वे सुनने की कोशिश करते हैं, इन्तज़ार करते हैं, जोड़-तोड़ करते हैं, और फिर पुष्टि करने के लिए सुनते हैं। यों कहें कि सबसे पहले वे सुनते हैं, बोलने की कोशिश करने से पहले वे अपनी भाषा के बारे में काफी कुछ सीखते हैं। फिर वे आजमाइशी तौर पर प्रयोग करते हैं। (और हाँ, कभी-कभी द्वितीय भाषा सीखने वालों को काफी अधिक अंग्रेजी सुनने की ज़रूरत पड़ती है, इससे पहले कि वे बोलने को विवश हों।)

भाषा अर्जित करने के बारे में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि बच्चे और वयस्क सह-घटना (शब्द और संरचनाएँ जो एक के बाद एक आती हैं) के प्रति विशेष रूप से सजग होते हैं। इसी ढंग से एक अँधी बच्ची सैली ने look और see के बीच अंतर सीखा था और वह अपनी भाषा में देखने वाले बच्चों से थोड़ी ही पीछे थी। जैसे "Look, here's how you wind the clock" और "Come and see the kitty." तो ज़ाहिर है कि जो शब्द वह सीख रही थी, उसने उसके दोनों ओर के शब्दों पर ध्यान दिया था। और यह सबसे महत्वपूर्ण है कि बच्चे (और द्वितीय भाषा सीखने वाले भी) वास्तव में चीज़ों को संदर्भ में ही सीखते हैं।

अब तक मैंने मुख्य रूप से यह बात की कि बच्चे आगे कैसे बढ़ते हैं, मगर वे अपनी गलतियों को पहचानकर पीछे भी चलते हैं। और किसी को पक्का पता नहीं है कि वे ऐसा कैसे करते हैं, सिवाय इसके कि यदि आप उनसे धीमे-धीमे और स्पष्ट रूप में बात करते रहें तो वे पीछे देखते हैं। शायद असंगतियों को पकड़ना सबसे महत्वपूर्ण होता है। बच्चे देखते हैं कि उनका बोलना पालकों से थोड़ा अलग है और फिर वे बदलाव कर लेते हैं।

मैंने विविधता के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा है। बच्चों का भाषा सीखना कई मायनों में सामान्य रूपरेखा में एक समान है। मगर व्यक्तियों के बीच विविधता तो होती है। कुछ बच्चे शब्दों के बारे में जानना चाहते हैं, कुछ बच्चे संरचनाओं के बारे में जानना चाहते हैं। दूसरा, भाषाओं के बीच विविधता होती है और लगता है कि भाषा के अलग-अलग प्रकार सीखने वालों में अलग-अलग रणनीतियों को बढ़ावा देते हैं। तीसरा, बेशुमार बच्चे द्विभाषा-भाषी और त्रिभाषा-भाषी बनते हैं। यह किसी भी बच्चे के लिए काफी फायदेमंद होता है। उनके पालक कभी-कभी चिंतित हो जाते हैं क्योंकि शुरु-शुरु में एक भाषा-भाषी परिवार की अपेक्षा ऐसा बच्चा भाषा में धीमे आगे बढ़ता नज़र आता है। मगर यह अस्थायी होता है। अंततः बच्चा दोनों भाषाएँ अर्जित कर लेता है, हालाँकि इससे कभी-कभी मदद मिलती है यदि एक पालक निरंतर एक ही भाषा बोले। यानी यदि बच्चे को पता हो कि उसकी माँ अंग्रेजी बोलेगी और पिता स्पैनिश बोलेंगे तो शायद मदद मिलेगी।

बहरहाल, मैं आखरी बात पर आती हूँ। समय की कमी के कारण मैंने सिर्फ भाषा की संरचना पर बात की। मैंने उस आम अंतःक्रिया की बात नहीं की जिसे भी सीखना होता है, जैसा कि निम्न कार्टून शृंखला में दिखता है:

एक ने टेलीफोन को संभालना नहीं सीखा है। टेलीफोन बजता है। बच्चा उसे उठाकर कहता है "हेलो"। दूसरे छोर की आवाज़ कहती है "क्या मैं तुम्हारे पिताजी से बात कर सकता हूँ", बच्चा कहता है, "ऊँह, मुझसे पूछने की ज़रूरत नहीं है।"

चर्चा

प्रश्न : सबसे पहले तो मैं आपको बहुत सुंदर व जानकारी से भरपूर व्याख्यान के लिए बधाई देता हूँ। मेरा सवाल नहीं है; वास्तव में कुछ जोड़ रहा हूँ। अब तक हम बातें इस लिहाज़ से ज़्यादा कर रहे हैं कि भाषा कैसे सिखाई जा सकती है या भाषा कैसे सीखी जाती है और इसका परिवेश आम तौर पर स्कूल की कक्षा होती है। मैं इसे आगे बढ़ाने के लिए शुरुआती उम्र में शिशु को उद्दीपन या बच्चे को उद्दीपन की भूमिका के बारे में जोड़ना चाहता हूँ। भाषा आकार लेने लगे उससे बहुत पहले बच्चे और देखभालकर्ता के बीच संवाद होने लगता है और भाषा सीखने की भूमिकाएँ शुरू हो जाती है। क्योंकि जब माँ बच्ची को देखती है और बच्ची माँ को देखती है और मुस्कान का आदान-प्रदान होता है, तो यह एक किस्म की अंतःक्रिया की शुरुआत है। और वर्तमान संदर्भ में, ज्ञान का निर्माण कैसे होता है, खासकर एशियाई देशों में, शुरुआती उद्दीपनों की भूमिका के चलते यह महत्वपूर्ण हो जाता है। हम प्रथम भाषा और द्वितीय भाषा पर ध्यान दे रहे हैं, मैं कहूँगा कि कोई भाषा नहीं। जहाँ मैं काम कर रहा हूँ (आदिवासी इलाकों में) वहाँ कई मर्तबा ऐसा होता है कि माँ और देखभालकर्ता और बच्चों को आपसी अंतःक्रिया का मौका ही नहीं मिलता। तो हमें इस बात पर भी जोर देना चाहिए कि बच्चों को कैसे भाषा का एक आवरण मिलना चाहिए, कैसे शुरुआती वर्षों में बातचीत होनी चाहिए क्योंकि वहीं समय है जब ये सारे केन्द्र सक्रिय होते हैं।

जीन ऐचिसन : मूलतः मैं आपकी बातों से सहमत हूँ और मेरा आशय है कि मानव भाषा के बारे में एक दिलचस्प बात यह है कि वे पैदा ही अंतःक्रिया के लिए हुई है। तो आप देखेंगे कि बहुत छोटे बच्चे की माँ भी यह नाटक करती है कि वे बातचीत में अपनी बारी से बोल रही है। तो मुझे नहीं लगता कि बारी-बारी से बात करना सिखाने की ज़रूरत है। वैसे मुझे यह ज़रूर लगता है कि इसके बारे में सजग होना ज़रूरी है। मुझे लगता है कि अक्सर हम बहुत ज़्यादा बोलते हैं।

प्रश्न : इतने थोड़े समय में यह, लगभग एक पूरे कोर्स का, अद्भुत प्रस्तुतीकरण था। आपने स्वर रज्जुओं और दिमाग के बड़े होने की बात जैविक सुरक्षा के बतौर की। मगर आपने भाषा संकाय का जिक्र नहीं किया। आपने इस बारे में भी कुछ नहीं कहा कि भाषा का विकास कैसे हुआ है, सिवाय इसके कि आपने दो मोटे-मोटे अंतर बताए। दूसरी बात मैं यह जानना चाहूँगा कि क्या भाषा और बुद्धि के पृथक्करण को डिसलेक्सिया, सेरेब्रल डॉमिनेन्स वगैरह के रूप में समझा जा सकता है। तीसरा कि हमारे पास भारतीय बच्चों के भाषा के अर्जन को लेकर काफी आँकड़े हैं। मेरा ख्याल है कि भारतीय बच्चों के मामले में भाषा सीखना पश्चिमी बच्चों से थोड़ा तेज़ होता है। कुदरती कुछ नहीं है, हो सकता है कि यह संयुक्त परिवार की वजह से हो जो बढ़ते बच्चों को कहीं ज़्यादा भाषा इनपुट उपलब्ध करता है। चौथा, जिनेटिक डिक्लाइन्स के बारे में क्या कहेंगे, वैसे यह भी एक जैविक कारक है?

जीन ऐचिसन : खैर, ये सवाल नहीं टिप्पणियाँ ही लगती हैं। मैं इतना ही कह सकती हूँ, कि सबसे पहले तो मुझे भलीभाँति पता है कि हिंदी बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं और यह निहायत दिलचस्प है और मेरे कुछ छात्रों ने इस पर काम किया है। मगर मुझे लगा कि सिर्फ हिंदी बच्चों की बजाय अंग्रेज़ी बच्चों के बारे में सुनना ज़्यादा रोचक होगा। मैं यह मानकर चल रही थी कि यदि मैंने हिंदी के बारे में बात की तो मैं ऐसे लोगों से बात करूँगी जो पहले से जानते हैं। मगर मैं हिंदी बच्चों के बारे में साहित्य से परिचित हूँ और सिर्फ हिंदी ही क्यों, कुछ दक्षिण भारतीय विद्वानों जैसे लक्ष्मी बाई ने तेलगू और तमिल (खासकर तेलगू) पर बहुत महत्वपूर्ण काम किया है। इसलिए मैंने भारतीय शोध का जिक्र नहीं किया।

मैं पूरी तरह सहमत हूँ कि मैं इस बारे में ज़्यादा बात कर सकती थी कि भाषा कैसे उभरी है। हमने इस पर एक किताब भी लिखी है— *दी सीइस ऑफ स्प्रीच*। आपने दो और टिप्पणियाँ की थी मगर मुझे पता नहीं कि वे सवाल थे या टिप्पणियाँ।

प्रश्न : मेरा सवाल खास तौर से भाषा और संज्ञान के पृथक्करण से संबंधित है। विलियम सिंड्रोम संबंधी अधिकांश अध्ययनों में विशिष्ट संज्ञान और अन्य किस्म के संज्ञान के परीक्षण के लिए पियाजेवादी ढाँचे

का उपयोग किया गया है। अब यह तो जानी-मानी बात है कि पियाजेवादी ढाँचा थोड़ा अमूर्त और पेचीदा है। मुझे लगता है कि हम एक अपेक्षाकृत सरल ढाँचा उपयोग करें, क्या आप बता सकते हैं कि आपके ख्याल में किस हद तक हमें वैसे ही नतीजे मिलेंगे?

जीन ऐचिसन : अब्बल तो मैं पियाजेवादी नहीं हूँ। यकीनन मैंने पियाजे पर हुए काम को पढ़ा है मगर पक्की तौर पर मैं पियाजेवादी ढाँचे में बंधी नहीं हूँ। मेरा ख्याल है कि कई लोगों ने भाषाओं के संबंधों पर, मेरा मतलब है अन्य भाषाएँ सीखने वाले बच्चों पर काम किया है, जैसे स्लोबिन ने वाकई दिलचस्प काम किया है जिसमें उन्होंने कई द्विभाषा-भाषी बच्चों को देखा और यह देखने का प्रयास किया कि कौन-सी भाषा पहले विकसित होती है और क्यों। और किसी ने अभी कहा था कि हिंदी अधिक तेज़ी से विकसित होती है। आम तौर पर स्लोबिन के अध्ययनों से हमें पता चलता है कि प्रत्येक भाषा के कुछ पहलू अन्य की अपेक्षा तेज़ी से विकसित होते हैं और किसी भी भाषा में कुल मिलाकर लाभ नहीं होता। आप कुछ चीज़ें जल्दी सीखते हैं, बस।

प्रश्न : भाषा और बुद्धि के पृथक्करण के जितने भी उदाहरण आपने दिए, वे ऐसे बच्चों के हैं जिनके पास सुविकसित भाषा थी मगर सुविकसित बुद्धि नहीं थी। क्या कोई ऐसे उदाहरण हैं जिनमें बच्चे (या किसी की भी) बुद्धि तो सुविकसित थी मगर भाषा नहीं, और यदि है तो इसके क्या मायने हैं? यह तो था पहला। दूसरा है, हम अक्सर सुनते हैं कि एक तीन वर्षीय बच्चा भाषा के लिहाज़ से वयस्क होता है। इस कथन का मतलब क्या है, और आपका पर्चा तो इस बात का गवाह है कि ऐसा नहीं है।

जीन ऐचिसन : सबसे मशहूर बच्ची, जिसके पास भाषा नहीं थी मगर बुद्धि थी, तो जेनी है जिसका अध्ययन कर्टिस ने किया था और मैंने जेनी का ज़िक्र इसलिए नहीं किया क्योंकि वह काफी समय से मौजूद रही है। मैं मानकर चल रही थी कि उसे सब लोग जानते हैं। शायद मैं गलत थी। अन्य मामले भी हैं, जैसे एक भिक्षु का किस्सा है जिसे किसी तरह के दौरे पड़ते थे और जब दौरे पड़ते थे तो वह बात नहीं कर पाता था मगर किसी होटल का रास्ता खोज लेता था। तो मैंने ऐसे बच्चों के बारे में बात की थी जो भाषा में तो धाराप्रवाह थे मगर जिन्हें कोई सामान्य समस्या नहीं थी क्योंकि मुझे लगा कि समय के अभाव में वही ज़्यादा रोचक होगा। और मुझे पता नहीं आपका दूसरा सवाल क्या है।

प्रश्न : दूसरा प्रश्न यह था कि हम कभी-कभी यह दावा सुनते हैं कि तीन वर्ष का बच्चा भाषा के लिहाज़ से वयस्क होता है, जिसका मतलब होता है कि बच्चा या बच्ची अपने घर की भाषा या देखभालकर्ता वगैरह की भाषा के बारे में सीखने योग्य सब कुछ जानता या जानती है और बाद में वह सिर्फ शेष चीज़ों को विस्तार देता है। मगर ऐसा लगता है कि आपका पर्चा कहता है कि बच्ची वास्तव में तीन साल के बाद भी लगातार परिपक्व होती है, विकसित होती है, भाषा सीखती है।

जीन ऐचिसन : हम ऐसा सोचते थे कि बच्चे यह सब तीन साल की उम्र तक हासिल कर लेते हैं। और कई पाठ्य पुस्तकें भी ऐसा कहती हैं मगर पिछले पाँच-दस सालों में इस पर काफी काम हुआ है। इससे पता चला है कि नहीं, उन्हें उतना पता नहीं होता जितना सब सोचते हैं। मेरा एक दोस्त था कोरी गमर जो लंदन में काम करता था, उसने यह पता किया था कि करीब आठ वर्ष के बच्चे यह नहीं समझ पा रहे थे— "the doll is easy to see." तो उसने एक गुड़िया की आँखों पर पट्टी बाँध दी और फिर बच्ची से कहा, "What does it mean to say that doll is easy to see?" इस पर बच्ची ने कहा, "You silly doll, take the blindfold off then you can see." ज़ाहिर है कि उनसे यह नहीं पूछा जा रहा था। तो इस तरह की संरचनाएँ भी हैं।